फरीदाबाद

मजदूर समाचार

विकल्पों के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

★ Reflections on Marx's Critique of Political Economy
★ a ballad against work
★ Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation
The books are free

नई सीरीज नम्बर 147 सितम्बर 2000

निराशा हैं आशा की किरण (3)

खेती- दस्तकारी से वंचित लोग रोटी के लिये नौकरी- चाकरी करने को मजबूर थे। चौथ वसूली से पीड़ित, बेगार करने को विवश किसान भी चाकरी को अधम मानते थे।

क्या करना है – कितना करना है – कैसे करना है – कैसा करना है – कब करना है – क्यों करना है का बेगाने होना, पराये हो जाना नौकरी को बेगार से भी बदतर बनाता है। व्यक्ति की नौकरी से संस्था की नौकरी में रूपान्तरण, यानि, मूर्त का अमूर्त होना बेगानेपन को कम नहीं करता बल्कि बढाता है। दोषारोपण के लिये व्यक्ति- विशेष का अभाव और अज्ञानवश नहीं बल्कि जानते हुये गलत करना छवि को सर्वोपरि महत्व का बना देते हैं। वास्तविक को छिपाना और छवि को उभारने के लिये पापड़ बेलना विभाजित व्यक्तित्वों की, टूटे लोगों की फसल लिये हैं। रंग- बिरंगे मनोचिकित्सकों का गली- गली में पदार्पण व्यक्ति के टूटने, विभाजित व्यक्तित्वों के व्यापक होने का लक्षण मात्र है। यह है वर्तमान।

काँटों की चाह

चाकरी का सर्वोपरि इच्छित चीज बन जाना एक अति पीड़ादायक प्रक्रिया का परिणाम है। खेती- दस्तकारी पर निर्भर मेहनतकशों और परजीवियों को किसानी- दस्तकारी की बरबादी की प्रक्रिया ने रोटी के लिये नौकरी की तलाश में भीड़ का रूप दिया। समाज की धुरी में होते परिवर्तन अखरने- बिदकने वाले शब्दों- विशेषणों को स्वीकार्य व इच्छित बनाने का सिलसिला संग- संग लाये। नौकरी और घटिया नौकरी के विभाजन से आरम्भ हो कर बढिया नौकरी और नौकरी का राग अलापते हुये यह अस्थि विसर्जन की पूर्व संध्या है जहाँ कोई भी नौकरी हो, नौकरी होना ही अपने आप में अच्छा है।

छिपाना जलालत को

– हुक्का अब कहाँ ? फुर्सत किसे है ? एक बीड़ी तक साथ पीने को कोई राजी नहीं है। बैठक खाली पड़ी रहती हैं। सिही गाँव में दस चौपाल होंगी – सब खाली रहती हैं।

– बाप- बैटे में भी रुपये- पैसे का हिसाब रखना अच्छी बात बन गई है।

– दाँव- पेचों की ही रह गई है अब पूरी व्यवस्था।

पीड़ा को व्यक्त करती इस प्रकार की बातें अक्सर की जाती हैं। लेकिन पैसा प्राप्त करने से और नौकरी से जुड़ी जलालतों को छिपाने का चलन रहा है। क्यों ?

पैसा नहीं माने भूखमरी और नौकरी नहीं माने बेरोजगारी, यानि, भूखमरी। हर चीज पैसे, नौकरी के दायरे में आती गई है। पैसे- नौकरी सब कुछ को अपने में समेटते गये हैं। जायज- नाजायज का विलोप होता गया है और मतलब मात्र इतना रह गया है कि पैसे कितने लाते हैं, रुतबा कितना है।

हालात यह रहे हैं जिनमें नौकरी करने वाले नौकरी में होती जलालतों को छिपाते रहे हैं। पीड़ा कम करने के लिये "नौकरी से ही तनखा मिलती है, पैसे मिलते हैं जिनके बिना रोटी- छत नहीं" वाले तर्कों से खुद को भरमाने की कोशिशें करते रहे हैं तथा औरों को तो प्रतिष्ठा के चक्कर में दिखाते ही पैसे रहे हैं।

दस्तक हकीकत की

पैसों की दलदल से पर्दे अभी भी पूरी तरह नहीं उठे हैं। करोड़पति बनने को आकर्षक दिखाने में वर्तमान के कर्णधार काफी हद तक अभी सफल हैं। लेकिन नौकरी, सरकारी नौकरी, परमानेन्ट नौकरी प्राप्त करने के प्रति निराशा व्यापक हो रही हैं।

ऐसे में नौकरी से जुड़ी जलालतों पर अनुभवों के व्यापक आदान- प्रदान काफी हद तक सहज- सरल बने हैं। इसने स्वयं नौकरी- चाकरी पर, उजरती व्यवस्था पर, मजदूरी- प्रथा पर ही प्रश्न- चिन्ह को सामान्य सवाल बना दिया है। नौकरी के प्रति निराशा ऐसे विकल्पों के लिये, ऐसी समाज रचनाओं के लिये आशा की किरण हैं जिनमें चाकरी के लिये कोई स्थान नहीं हो।

नौकरी के मसले पर कुछ चर्चा अगले अंक में भी। (जारी)

रफ्तार जानलेवा है

वाह !

देहात से समाचार : "जलालपुर के पास हमारे गाँव में पिछले साल धान की रोपाई के लिये दिहाड़ी 20 रुपये, शर्बत- चबैना और दोपहर का भोजन थी। इस वर्ष गाँव के स्त्री- पुरुष मजदूरों ने आपसी तालमेल बढाये। कोई एकता नहीं, कोई नेता नहीं, कोई फूँ- फाँ नहीं। आपसी तालमेलों को बढा कर देहाती स्त्री- पुरुष मजदूरों ने इस साल धान रोपाई की दिहाड़ी 30 रुपये, शर्बत- चबैना और दोपहर का भोजन अथवा 40 रुपये और शर्बत- चबैना करवा ली।"

सोल्ड ड्रिन्क्स

कोका कोला, पेप्सी कोला आदि कोल्ड ड्रिन्क्स चटपटे विष हैं। शरीर के लिये यह धीमे जहर मन के लिये तत्काल- तुरन्त विषपान हैं।

पेप्सी कोला, कोका कोला आदि कोल्ड ड्रिन्क्स में अत्यधिक जहरीले फास्फोरिक एसिड के अलावा कार्बोलिक एसिड, एरिथारबिक एसिड व बेंजोइक एसिड नामक तेजाब भी पाये गये हैं। लत पैदा करने के लिये कोका कोला, पेप्सी कोला आदि कोल्ड ड्रिन्क्स में घातक सीसा- लैड तथा कैफीन भी मिलाये जाते हैं।

लागत से एक हजार प्रतिशत से ज्यादा मार्जिन कोल्ड ड्रिन्क्स में है। सरकारें और कम्पनियाँ कोल्ड ड्रिन्क्स के व्यापक प्रसार के जरिये ढेरों में पैसे बटोरती हैं। इसलिये सरकारों की छत्रछाया में कोका कोला और पेप्सी कोला बिक्री बढाने के लिये हर वर्ष अरबों रुपये खर्च कर फिल्मी सितारों व खिलाड़ियों वाले अपने विज्ञापन सभी टी वी चैनलों, अखबारों व पत्रिकाओं में बार- बार देती हैं। मन पर जहरीली जकड़ कसने व फैलाने के लिये पेप्सी और कोका कोला पूरी दुनियाँ में खेलों व फिल्मों के प्रमुख प्रायोजकों में हैं। (जानकारी 'अभियान' पत्रिका के संग आये पर्चे से ली है।)

एस्कोर्ट्स मजदूर : "सब कुछ उल्टा- पुल्टा हो रहा है। कम्पनियाँ पगला गई हैं। वर्क लोड बढाने और तनाव में वृद्धि के लिए मैनेजमेन्टें छुरों पर नित नई धार लगाती हैं। हमारी रेल बनाती [illegible] ही हमें बचाती लगती है – मंडी में [illegible] नहीं होती तभी हमें राहत मिलती है।

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

अल्फा टोयो मजदूर : " कैजुअल वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। चोट लगने पर इलाज नहीं करवाते और घर जाने के लिये छुट्टी माँगते हैं तो वह भी नहीं देते। हाथ- पैर कटने अथवा टूटने पर थोड़े दिन प्रायवेट इलाज करवाते हैं और फिर निकाल देते हैं। प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची भी हमें नहीं देते। दहाई से कम वाले वेतन के पैसे नहीं देते – 9 रुपये तक के लिये कहते हैं कि फिर आना पर चक्कर कटवाने के बाद भी देते नहीं। ओवर टाइम के 100 घन्टों को 60 ही दिखाते हैं और पैसे भी सिंगल रेट से देते हैं।"

जी.एस. लैम्प वरकर : " हम 100 को परमानेन्ट कहते हैं और बीस साल की सर्विस बाद 1700- 1800 रुपये वेतन देते हैं। ओवर टाइम पेमेन्ट डबल की बजाय सिंगल रेट से देते हैं। डी. ए. के जो पैसे आते हैं वे भी पूरे नहीं देते। ठेकेदारों के 50 मजदूर हैं जिन्हें लगाते समय 1900 रुपये तनखा बताते हैं पर महीना पूरा होने पर 1000 रुपये ही देते हैं। इन वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं और फण्ड नहीं है।"

नहीं रखते। अपने पैसों से इलाज करवाना पड़ता है – बहुत कहने पर दस- पाँच रुपये दे देते हैं। महीने की तनखा 1200 रुपये देते हैं।"

बी.पी.आर. वरकर : " परमानेन्ट 100 हैं और ठेकेदारों के 400 वरकर हैं। सब जगह ठेकेदार हैं, 25- 30 हैं। ड्युटी 12 घण्टे की लेते हैं और महीने के 1800 रुपये देते हैं। यह पैसे भी 28- 29 तारीख को जा कर देते हैं। न ई.एस. आई. है, न फण्ड।"

बाटा मजदूर : " ठेकेदार हम से हवाई डिपार्टमेन्ट में छँटाई तथा पैकिंग का काम करवाता है और महीने की 1200- 1300 रुपये तनखा देता है। यह पैसे भी 7 से पहले नहीं बल्कि 22 तारीख को जा कर। हमारी न ई.एस.आई. है और न फण्ड।"

आटोपिन वरकर : "जुलाई का वेतन आज 19 अगस्त तक नहीं दिया है। मई- जून- जुलाई में करवाये ओवर टाइम काम के पैसे भी मैनेजमेन्ट ने आज तक नहीं दिये हैं।"

कारटैक्स डाइंग मजदूर : " ड्युटी 12 और जुलाई की तनखायें भी आज 12 अगस्त तक नहीं दी हैं।"

इन्जेक्टो वरकर : "जुलाई का वेतन आज 20 अगस्त तक मैनेजमेन्ट ने नहीं दिया है।"

फर आटो मजदूर : " 50 परमानेन्ट, 100 कैजुअल और 150 ठेकेदारों के वरकर हैं। बरसों काम करने के बाद भी कैजुअलों को परमानेन्ट नहीं करते। वैसे परमानेन्टों की भी कोई वैल्यू नहीं है। मैनेजमेन्ट ने 5- 7 गुण्डे पाल रखे हैं जो आफिस में बैठे हुक्का पीते रहते हैं। तनखा 7 से पहले नहीं देती – कभी 15 तो कभी 25 तारीख को देती है।"

पेप्सी वरकर : " 6 सैक्टर में पेप्सी स्टोर में रोज 12 घण्टे ड्युटी करने पर महीने में 1200 रुपये देते हैं। क्या तो खुद खायें और क्या बच्चों को खिलायें ? ! इसी चिन्ता में जिन्दगी खत्म होती जा रही है।"

इलपिया पैरामाउन्ट मजदूर : " कैजुअल वरकरों को 1200 से 1800 रुपये महीना देते हैं। हम 90 परमानेन्ट मजदूरों को सिर्फ एक बार

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं ; हजारों नट- बोल्ट होते हैं ; नालियाँ- सीवर होते हैं ; कई- कई ऑपरेशन होते हैं ; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं : ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें ; ✱ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो ; ✱ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें ; ✱ बिजली कभी कड़के, कभी दमके, कभी आँख- मिचौनी करने मक्का- मदीना चली जाये ; ✱ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के, शान्त मन से, ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

ब्रॉन्ज पाउडर मजदूर : " ठेकेदारी है। तनखा 1200- 1300 रुपये महीना और वह भी 7 तारीख से पहले नहीं बल्कि 28 को जा कर देते हैं। न ई.एस.आई है, न पी.एफ.।"

एस.के.एन. वरकर : " परमानेन्ट 100 हैं और कैजुअल 250 – पाँच- सात साल से लगातार काम कर रहे भी कैजुअल हैं जिन्हें 1550 रुपये महीना देते हैं। ओवर टाइम काम जबरन करवाते हैं और पेमेन्ट सिंगल रेट से – कैजुअलों के तो घण्टे कम लिख कर अतिरिक्त धाँधली करते हैं। अकस्मात आई आपातस्थिति में भी छुट्टी देने से मना करके हद करते हैं – कहते हैं कि एक दिन पहले बताया करो आया ऐसी बातें हमें पूर्व सूचना दे कर होती हों। कैजुअलों की न ई. एस.आई है और न पी.एफ.।"

स्टार मैटल इन्डस्ट्रीज मजदूर : " पावर प्रेस का काम है। चोट लगती रहती हैं। ई.एस. आई. कार्ड नहीं दिये हैं और फैक्ट्री में डेटोल तक घण्टे की लेते हैं और बदले में 1800 रुपये महीना देते हैं। ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं पर कार्ड नहीं दिये हैं।"

अतुल ग्लास वरकर : " मैनेजमेन्ट ने स्टाफ को जून व जुलाई की और मजदूरों को जुलाई की तनखा आज 12 अगस्त तक नहीं दी है।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : " एनसीलरी प्लान्ट में कैजुअल वरकरों को 1600- 1700 रुपये ही वेतन देते हैं और इनमें से भी छुट्टियों के पैसे काट लेते हैं। जबरन ओवर टाइम काम करवाते हैं लेकिन इसके डबल रेट से पैसे नहीं देते बल्कि बदले में सिंगल छुट्टी देते हैं।"

विक्टोरा टूल्स वरकर : "बरसों से लगातार काम कर रहे मज़दूर कैजुअल हैं और इन्हें ई.एस. आई. कार्ड भी नहीं दिये हैं।"

सुपर ऑयल सील मजदूर : " मार्च का वेतन नहीं दिया, फिक्स कर दिया। इधर जून प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची दी है – 6- 7 साल से कोई पर्ची नहीं दी है हालांकि हर महीने हमारे वेतन में से प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे काटते हैं।"

टेकमसेह वरकर : " बल्लभगढ प्लान्ट से मैनेजमेन्ट ने महीनों पहले तालाबन्दी उठा ली थी पर इन्डस्ट्रीयल एरिया प्लान्टों से तालाबन्दी अभी तक नहीं उठाई है। लेकिन इससे क्या ? इन्डस्ट्रीयल एरिया के मेन प्लान्ट के एक गेट पर अब भी ताला लगा है पर दूसरे गेट से मजदूर अन्दर ले जा कर मैनेजमेन्ट काम करवा रही है।"

टेलीफोन एक्सचेंज मजदूर : " पाँच साल से लगातार काम कर रहे लोग भी कैजुअल हैं। कागजों में वेतन 2200 रुपये दिखाते हैं पर हमें देते 1500 रुपये ही हैं। सरकारी है पर न ई.एस. आई. है और न प्रोविडेन्ट फण्ड।"

लिन्क इन्टरप्राइजेज वरकर : " ई. एस. आई. के पैसे काटते हैं, कार्ड नहीं देते। प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे काटते हैं, पर्ची नहीं दी है।"

भाई मिक्सर मजदूर : " ठेकेदारों के वरकरों को महीने का वेतन 1000- 1200 रुपये ही देते हैं। न ई.एस.आई. है, न प्रोविडेन्ट फण्ड।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "ठेकेदारी- प्रथा सस्ती पड़ती है या परमानेन्टी वाली वफादारी ? रिसर्च- अनुसन्धान ने मैनेजमेन्टों को दुविधा में डाल दिया है। जापान में कुछ विद्वान कैजुअल वरकर रखने व ठेकेदारों के जरिये वरकर रखने को कम्पनियों के लिये खतरनाक सिद्ध कर रहे हैं। यह विद्वान परमानेन्ट वरकर रखने को, परमानेन्टी से जुड़ी वफादारी के दृष्टिगत, कम्पनियों के लिये सस्ता बता रहे हैं।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

आड़े-टेढ़े जाल

उषा टेलिहोइस्ट मजदूर : " छँटनी के लिये मैनेजमेन्ट ने वी. आर.एस. लगाई पर वरकर झाँसे में नहीं आये। इस पर मैनेजमेन्ट ने स्टाफ को छेड़ा। ट्रान्सफर कर और फिर नई जगह खाली बैठा कर एक बार स्टाफ में से मैनेजमेन्ट कई को नौकरी से निकाल चुकी। फिर वही ढर्रा अपना कर मैनेजमेन्ट ने 20 जुलाई को स्टाफ के 11 लोगों का गेट रोका – विरोध में पूरा स्टाफ फैक्ट्री में नहीं गया। दो- तीन दिन इस सिलसिले के जरिये खानापूर्ति कर मैनेजमेन्ट ने 24 जुलाई को फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी और सब मजदूर भी बाहर कर दिये। महीना होने को है और तालाबन्दी जारी है।"

कटते अँग-घटती उम्र

मितासो एप्लाइन्सेज मजदूर : " कम्पनी में कैजुअल वरकरों की तीन कैटेगरी हैं। दस- बारह साल से लगातार काम कर रहों को मन्थली कैजुअल कहते हैं। इन्हें वर्दी- साबुन देते हैं और जूतों के पैसे कभी दे देते हैं, कभी नहीं देते। दिवाली पर गिफ्ट देते हैं पर बोनस में 500 रुपये ही देते हैं जबकि परमानेन्टों को बोनस 20 प्रतिशत है। साप्ताहिक छुट्टी देते हैं और वेतन 72 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से देते हैं। दूसरी कैटेगरी डेली वेज कैजुअलों की है। इन्हें 6- 7 महीने में ब्रेक दे कर फिर रख लेते हैं। इन्हें वर्दी- साबुन- जूते- बोनस नहीं देते। इनमें किसी को साप्ताहिक छुट्टी देते हैं, किसी को नहीं देते। तीसरी कैटेगरी फार्म वाले कैजुअलों की है। इन्हें ढाई- तीन महीने बाद निकाल देते हैं और फिर नहीं रखते। इन्हें साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते और 63- 65 रुपये रोज के हिसाब से पैसे देते हैं। किसी भी कैटेगरी के कैजुअलों के पास ई.एस.आई. कार्ड नहीं हैं। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। परमानेन्ट वरकरों में ही आधे डुँडे हैं – किसी की दो, किसी की तीन उँगली कटी हैं। कैजुअल वरकर का हाथ कटने पर प्रायवेट नर्सिंग होम में इलाज करवा कर नौकरी से निकाल देते हैं। 12- 13 ठेकेदारों के जरिये फैक्ट्री में 150 वरकर लगा रखे हैं जिन्हें 1100- 1200 से 1800- 2000 रुपये वेतन देते हैं। ओवर टाइम के पैसे परमानेन्टों को डेढ़े रेट से और कैजुअलों व ठेकेदारों के वरकरों को सिंगल रेट से देते हैं। सैक्टर–24 प्लान्ट में 70 परमानेन्ट, 60- 65 कैजुअल और 150 ठेकेदारों के वरकर हैं। कम्पनी ने परमानेन्टों को निकालने के लिये वी.आर.एस. लगाई है और इसे थोपने के लिये परेशान कर रही है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : " 1986 तक महीने में हम अगर एक लाख बीस हजार शॉकर बना देते थे तो मैनेजमेन्ट लड्डु बाँटती थी। डेढ लाख बनाने पर 450 रुपये इनाम दिया था। उस समय शॉकर डिविजन में 850 मजदूर थे और लगातार ओवर टाइम लगता था – कभी- कभी तो तनखा से ज्यादा ओवर टाइम काम के पैसे हो जाते थे। मैनेजमेन्ट ने 1990 में मजदूर निकालने शुरू किये। आज शॉकर डिविजन में 321 वरकर हैं तथा ओवर टाइम बन्द है और महीने में हम दो लाख चालीस हजार शॉकर बनाते हैं तब भी कोई बात नहीं। हाँ, नई- नई अफवाहें मैनेजमेन्ट फैलाती रहती है – इधर हम में से 30- 40 को रेलवे डिविजन भेजने की बातें हैं।"

कबाड़ी का वरकर : " गाँव में परिवार पैसे और इज्जत वाला माना जाता है लेकिन कलह तथा परेशानियाँ इस कदर बढती गई कि पलायन कर मैं यहाँ दिल्ली आ गया। रिश्तेदारों के यहाँ शरण ली पर थोड़े दिनों में ही मुझे काफी- कुछ समझ में आ गया और मैंने उनका साथ छोड़ दिया। काफी भटकने के बाद मुझे इस कबाड़ी के गोदाम पर काम मिला है। यहाँ 24 घण्टे की ड्युटी है और वेतन मात्र 1800 रुपये महीना। कबाड़े की लोडिंग- अनलोडिंग, छँटाई और इधर से उधर करने में हाथ- पाँव में चोट तो लगती ही रहती हैं, कबाड़ी की फटकार के संग- संग पुलिस की झाड़ भी खानी पड़ती हैं। जिन्दगी कैसे जीऊँगा? ऐसे लगता है जैसे लोग एक- दूसरे से ऊब गये हैं।"

आदान-प्रदान

लुधियाना में मजदूर (पत्र) : " मैं यहाँ खराद मशीन चलाने का काम करता हूँ। छोटी- छोटी फैक्ट्रियों में लगता रहा हूँ। यहाँ की फैक्ट्रियों में भी हालात बहुत खराब हैं। रोज वरकर निकाले जाते हैं। मेरे साथ भी कई बार ऐसा हुआ है। अभी भी काम कोई अच्छी जगह सैट नहीं है। कुछ समय पहले मैं **स्टेन्डर्ड कम्बाइन्स** की एक फैक्ट्री में लगा था। फ़ोरमैन, सुपरवाइजर और मैनेजर तीनों मिल कर वरकरों से धक्का करते और चाँटा भी मार देते थे। इस सब का विरोध करने पर हम 6 लोगों को निकाल दिया। अब लेबर कोर्ट में केस चल रहा है। तारीख पर कभी कोई आता है, कभी नहीं।"

कटलर हैमर वरकर : "बड़े पैमाने पर छँटनी करने के लिये तालाबन्दी करने का जो जाल मैनेजमेन्ट ने फरवरी- मार्च में बिछाया था उसे हम ने काट दिया था। तब बौखला कर मैनेजमेन्ट ने बहुत परेशान करना शुरू किया ताकि परेशान हो कर हम नौकरी छोड़ दें पर इस तरह भी मैनेजमेन्ट की दाल हम ने नहीं गलने दी। पलट कर मैनेजमेन्ट ने स्टाफ पर वार शुरू किये और नौकरी छोड़ने के लिये उन पर दबाव बढा रही है। इधर मैनेजमेन्ट ने छँटनी के लिये 48 दिन वाली वी.आर.एस. लगाई है। डर- भय बढाने के लिये मैनेजमेन्ट आर्डर नहीं होने का रोना रो रही है और 'कम्पनी नहीं चलेगी' का प्रचार करवा रही है। जिन्होंने डर- लालच से नौकरी छोड़ी है उनकी दुर्गत हम रोज देख रहे हैं। मैनेजमेन्टों के झाँसों को बहुत सुना- देखा है। इसलिये खाली बैठाने पर न तो एस्कोर्ट्स वरकरों ने नौकरी छोड़ी और न हम छोड़ेंगे। ऐसे ही गेट रोक कर किसी को नौकरी से नहीं निकाल सकते क्योंकि ऐसा करने पर बची- खुची वफादारी भी दफन हो जाये और कम्पनियाँ चल ही नहीं सकें। इसीलिये पुचकार कर - धमका कर इस्तीफे लिखवाने के लिये मैनेजमेन्टें पापड़ बेलती हैं।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "ओवर टाइम को ओवर स्टे कह कर मैनेजमेन्ट ने डबल की बजाय सिंगल रेट से पेमेन्ट की थी। इसी तर्ज पर इधर मैनेजमेन्ट ने टीम बनाई हैं और हरेक को टीम मेम्बर का लैटर दिया है। अब पद नहीं होंगे – हैल्पर, आपरेटर, सैटर, इन्सपैक्टर, असिस्टेन्ट फोरमैन तक सब टीम मेम्बर होंगे। सुपरवाइजरों को टीम लीडर बनाया है। टीम बनाने का एक सीधा- सा कारण तो है : आगे किसी का प्रमोशन नहीं किया जाये। लैटरों में डब्लू 1, डब्लू 2,.... को बदल कर ई 1, ई 2,..... कर दिया है – वरकर नहीं, अब सब इम्पलाई होंगे! टीम नाम से हर एक की जिम्मेदारी बढा दी है, मानि, हर एक का डर बढा दिया है। आठ घन्टे टैन्शन ही टैन्शन।"

कैनन इंडिया मजदूर : " कैजुअलों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते थे और बच्चों तक को फैक्ट्री में लगा रखा था। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं और हाथ कटने पर कैजुअल का प्रायवेट इलाज करवा कर निकाल देते थे। परमानेन्ट वरकरों को 20 प्रतिशत बोनस देते थे पर 1998 में यह 14 प्रतिशत कर दिया और 99 में भी 15 प्रतिशत ही दिया। काम बढाने के बदले में वार्षिक वेतन वृद्धि 12- 14- 15 प्रतिशत करते थे उसे भी 8 प्रतिशत कर दिया। ऊपर से जबरन 12- 16 घण्टे रोज काम करवाते थे पर ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से करते थे। ऐसे में बढते असन्तोष को दबाने के लिये मैनेजमेन्ट ने बात- बात में गेट रोकना आदि शुरू किया। राहत के लिये हम परमानेन्टों ने मुख्यमन्त्री समर्थक यूनियन का झण्डा 10.12.99 को फैक्ट्री गेट पर लगाया। मैनेजमेन्ट ने सब कैजुअलों और बच्चों को नौकरी से निकाल दिया तथा इसके बाद परमानेन्टों में से भी 96 को सड़क पर फेंक दिया है और नई भर्ती की है। मुख्यमन्त्री के एक अन्य समर्थक ने मैनेजमेन्ट पक्ष की कमान सम्भाली है। अब हालात यह हैं कि एक तरफ मुख्यमन्त्री का बेटा मीटिंगों में मजदूरों के लिये सब ठीक कर देने के भरोसे दिलाता है और दूसरी तरफ श्रम विभाग, पुलिस तथा मैनेजमेन्ट खुले आम मजदूरों पर गैर- कानूनी हमले भी कर रहे हैं। नेताओं से राहत मिलेगी की आस ने हमें और फँसा दिया है। बिना किसी पत्र के नौकरी से निकाले मजदूरों को जून का वेतन आज 31 अगस्त तक नहीं दिया है।"

बन्द कमरों की करामातें

एस्कोर्ट्स मजदूर : " मैनेजमेन्टें परेशान हैं। वी.आर.एस. अटक गई हैं। न तो एकमुश्त पैसों का लालच और न विभिन्न तरीकों से परेशान करना ही मजदूरों को नौकरी छोड़ने के लिये तैयार कर पा रहे। बाटा फैक्ट्री में आठ महीने की तालाबन्दी भी मैनेजमेन्ट के काम नहीं आई। ऐसे में मैनेजमेन्टों ने डर बढाने के लिये एक नया प्रोपगेण्डा शुरू किया है। खबर फैलाई गई कि फलाँ ने आयशर से 35 करोड़ माँगे और कम्पनी पैसे देने की बजाय फरीदाबाद छोड़ कर जा रही है। फैक्ट्री बन्द होने की दहशत ने झटके से 120 मजदूरों और 65 स्टाफ वालों को वी.आर.एस. की दलदल में धकेल दिया। गुडईयर के यहाँ से जाने और लखानी शूज के बन्द होने की चर्चायें तो थी ही, गरमागरम खबर एस्कोर्ट्स के फरीदाबाद छोड़ने की है। प्लान्ट में चर्चा थी कि एक बड़े अखबार में यह बात छपी है कि फलाँ ने एस्कोर्ट्स से 25 करोड़ माँगे तो उसे कहा कि ठीक है दे देंगे पर व्हाइट मनी देंगे। लेकिन उसे तो ब्लैक मनी चाहिये। इस पर बॉस ने कहा कि ब्लैक मनी नहीं दूँगा, फैक्ट्री फरीदाबाद से ले जाऊँगा आदि-आदि। पहले ही जो डर हैं उन्हें बढाने के लिये यह किया गया है और हालात ऐसी हैं कि कुछ भी उड़ा दो, उस पर व्यापक स्तर पर सिर हिलने लगते हैं। मैनेजमेन्टों से निपटने के लिये जरूरी है कि हम करामातों पर सिर हिलाने की बजाय कुरेद कर चीजों को देखें। डर फैलाने में योगदान देने की बजाय हमें आपसी चर्चाओं द्वारा मैनेजमेन्टों के गुब्बारों में पिन चुभानी चाहियें।"

के. जी. खोसला कम्प्रेसर वरकर : " नौकरी को हर समय खतरा एक समस्या बन गई है। लीडरों आदि के जरिये कभी कुछ तो कभी कुछ प्रचार कर मैनेजमेन्टें हर समय डर का माहौल बनाये रखती हैं। हमारी कम्पनी में इस समय मेन्टेनैन्स के बहाने 4 सी.एन.सी. मशीनों को पूना प्लान्ट ले जाने की चर्चा है। प्रचार यह भी है कि पूना में माल से गोदाम भर रहे हैं। इस सिलसिले में पहले तो यहाँ ले-आफ की बातें हुई और फिर हफ्ते में चार दिन छुट्टी, सप्ताह में तीन दिन दिहाड़ी की दहशत। यह प्रचार तो चलता रहता ही है कि कम्पनी को भारी घाटा हो रहा है।"

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती

एस्कोर्ट्स मजदूर : "फस्ट प्लान्ट की शॉकर डिविजन से ट्रान्सफर, खाली बैठा कर व अन्य तरीकों से परेशान करके इन डेढ साल में 30-31 पुराने मैनेजरों को मैनेजमेन्ट ने दूध से मक्खी की तरह निकाल दिया है और पुराना मैनेजर एक ही बचा है। मैनेजमेन्ट नये-नये डिग्री होल्डर ज़ी टी भर्ती करती है जिन्हें मजदूरों से भी कम, 6200-6300 रुपये महीना देती है – पक्के करने के आश्वासन की चाशनी के संग।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✶ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं और 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें और अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

प्यारो जरा देख के

एक बुजुर्ग : "प्रिसीजन स्टील, बोल्टन, परमेश्वरी कॉलोनी में एक वर्कशॉप और अल्फा टोयो में नौकरी कर चुका हूँ तथा अब नौकरी ढूँढ रहा हूँ। इधर 8 वर्ष से पत्नी दिल्ली में एक फैक्ट्री में काम कर रही है। वहाँ जवान लड़कियों को ही रखते थे इसलिये पत्नी की उम्र कम बता कर, 27 वर्ष लिखवा कर लगवाया था। अब पत्नी को स्टेशन छोड़ने आया था। प्रोविडेन्ट फण्ड में एक अच्छे परिचित की सलाह पर हम सोचते हैं कि नौकरी के 10 वर्ष पूरे होने से पहले ही पत्नी नौकरी छोड़ दे ताकि फण्ड के पूरे पैसे निकल जायें – कम्पनी के कागजों में पत्नी की आयु 50 वर्ष होने से पहले तो हम दोनों मर जायेंगे। अखबारों में सरकार लम्बे-चौड़े वादे और घोषणायें मजदूरों की भलाई के करती है पर यह सब झूठे हैं। मेरी पत्नी के साथ 3 हजार लड़के-लड़कियाँ फैक्ट्री में काम करते हैं। तनखा टाइम पर नहीं देते और माँगने पर कहते हैं कि माल नहीं बिका है, पैसा नहीं आया है, माल वापस आ गया है, पैसे नहीं हैं तनखा कहाँ से दें।"

कोकोवायर वरकर : "फैक्ट्री बन्द पड़ी है पर कागजों में चालू दिखा रखा है – नीचे से ऊपर तक पैसों का खेल है।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "छँटनी करने, काम का बोझ बढाने और तनाव में वृद्धि के तरीके मजदूर खुद सुझायें! मैनेजमेन्ट की भाषा में क्वालिटी बढाने, मैनपावर कम करने, प्रोडक्शन में वृद्धि के लिए क्या आलट्रेशन करने हैं यह वरकर बतायें। फिर वरकरों की सहमति से इन्हें किया जायेगा। धारदार परिवर्तन सुझाने के लिये वरकर को शाबासी मिलेगी, दो किलो की शाबासी। बड़े साहब के पीछे-पीछे कैमरामैन आता है और मीटिंग में साहब शाबासी देते हैं, फोटो खिंचते हैं। ऐसी एक शाबासी से ही मेरा मन भर गया है – आगे और कोई शाबासी मुझे नहीं चाहिये।"

मौर्या उद्योग वरकर : " ठेकेदार इतने हैं कि गिनती करना मुश्किल। शामत हमारी – आठ घन्टे में 1200 सिलेन्डरों की वैल्डिंग के लिये सिलेन्डर चढाने-उतारने में हम पसीने-पसीने रहते हैं। इधर कुछ दिन से सिलेन्डरों का उत्पादन बन्द है क्योंकि कई सिलेन्डर लीक पाये जाने पर सरकार ने कम्पनी को नोटिस दिया है। रात को चुपचाप ट्रकों में लाद कर मैनेजमेन्ट सिलेन्डरों को फैक्ट्री से जमशेदपुर ले जा रही है।"

लालडी मजदूर : "ई.एस.आई. तथा पी.एफ. कटता था लेकिन इधर 4 साल से मैनेजमेन्ट नहीं काट रही। कई मशीनें खाली खड़ी रहती हैं और मैनेजमेन्ट कहती है कि आर्डर नहीं हैं।"

इन्जेक्टो वरकर : " हर एग्रीमेन्ट में अब तक वर्क लोड बढाया गया है, उत्पादन बढाया गया है। इस बार की एग्रीमेन्ट में तो और ज्यादा वर्क लोड बढाने के लिये माहौल बनाया जा रहा है। हमारे सामने कटलर हैमर है। वहाँ एग्रीमेन्टों के जरिये प्रोडक्शन बढाते-बढाते आज मजदूरों के खाली बैठने की नौबत आ गई है। कटलर हैमर के जिस वरकर से बात करो वह दुखीं-चिन्तित है।"

बुजुर्ग दूधिया : " बहुत जगह नौकरी की पर कहीं परमानेन्ट नहीं हुआ। हार-थक कर रोटी के लिये साइकिल पर दूध के डिब्बे लादे हैं। फरीदाबाद क्या, कहीं जाओ नौकरियों में अब कुछ नहीं बचा है। नौकरी को तो अब बस वैसे ही समझो जैसे दूध निकालने के बाद बचा डोंकरा। समाज में आदमी भी आदमी नहीं रहा बल्कि डोंकरा हो गया है।"

झालानी टूल्स मजदूर : " नौकरी ने सब कुछ को अपने में समेट लिया है और पक्की नौकरी पाना आज चाँद को छूने जैसा है। ज़ायज-नाजायज को खुड्डे-लाइन लगा दिया गया है। उह! नौकरी में बने रहने, अपनी नौकरी बचाने के लिये हम ने क्या-क्या बरदाश्त किया!! मैनेजमेन्ट हमारे पैसे गड़पती रही और नौकरी के फेर में हम आँखों के सामने खड़ी हकीकत को देखने से इनकार करते रहे। कम्पनी समाप्त करने, वाइन्ड अप करने के बी.आई.एफ.आर. के आदेश के बाद भी मन के कोनों में नौकरी बची रहने की आशा उमड़ती रही! देखो, कम्पनी की सम्पत्ति 45 करोड़ रुपये रह गई है और कम्पनी पर देनदारी दो सौ-ढाई सौ करोड़ रुपये की है। कानूनों के अनुसार हमारे जो बनते हैं उन में से आधे पैसे तो डुबो दिये गये हैं, डकार लिये गये हैं और आधे-परदे जो बचे हैं उनके लिये हमें बरसों की कोर्टबाजी झेलनी होगी।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।